दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया में भारतीय संस्कृति एवं विरासत विषय पर हिंदी विश्वविद्यालय में 24-25 को अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन
dेश-विदेशों के विद्वान करेंगे शिरकत

वर्ष, दि. 23 फरवरी 2018 : अंखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली एवं महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के संयुक्त तत्त्वाधारण में दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया में भारतीय संस्कृति एवं विरासत विषय पर दो दिवसीय (24-25 फरवरी) अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में किया जा रहा है। सम्मेलन का उद्घाटन 24 फरवरी को प्रात: 10.30 बजे शामिल मुखर्जी, सभागर में होगा। इस सम्मेलन में भारतीय लोक परंपरा, भारतीय कला (द्वारा एवं प्रदर्शनकारी कला) भारतीय स्थापत्य एवं विरासत, भारतीय दर्शन, भारतीय आर्थिक प्रभाव, व्यापार एवं वाणिज्य, भारतीय सामुदायिक गतिविधियों, भारतीय प्रवासी समुदाय, भारतीय धर्म एवं अयात्म, भारतीय नीति एवं जीवन मूल्य, भारतीय प्रजा, भारतीय साहित्य, राजस्व एवं प्रशासन की भारतीय संरचना इतिहादिय प्रबंधियों पर विस्तार किया जाएगा एवं स्थापत्य प्रस्तुत किए जाएगे। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गीतीश कुमार करेंगे।

इस अवसर पर भारतीय इतिहास संकलन योजना के अध्यक्ष डॉ. सरीश कंद्रिमत, भारतीय इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय संगठन सचिव डॉ. बाल मुकुंद पांडेय, सम्मेलन के मुख्य संयोजक प्रो. एस. पी. बंसल, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के प्रतिनिधि डॉ. ओम उपाध्याय एवं आयोजन सचिव प्रो. अनिल कुमार राय प्रमुखता से उपस्थित होंगे।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के नागाजुक के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के आयोजक एवं अध्यक्ष डॉ. बाल मुकुंद पांडेय, एवं सभागर अध्यक्ष डॉ. एस. मिर्जा उपस्थित थे। सम्मेलन की जानकारी देते हुए डॉ. बाल मुकुंद पांडेय ने बताया कि वस्तु: इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का मूल उद्देश्य दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया के मानवविद्वादी आदर्श, राजनीतिक मूल्यों, कला, संगीत, दर्शन एवं संस्कृति के साथ भारत के सहस्रयुगिय भारतीय सांस्कृतिक और ऐतिहासिक समकालिक का सामय संकेत अवगत कराना है, ताकि नवीन शोध एवं तथ्यों के आलोक में इस क्षेत्र पर भारत के सांस्कृतिक प्रगति की समुचित व्याख्या की जा सके। साथ ही, इस क्षेत्र में भारतीय विरासत की समस्या आशेत हैं। उन्होंने बताया कि दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया के भारत का सम्बन्ध अन्य तट का रहा है। इस क्षेत्र में भारत की बहुआयामी उपस्थितियों 200 से ही प्रायः हो गई थी। यह भारतीय संस्कृति एवं वैदेशिक धर्म एवं बौद्ध धर्म का एक अहूँ संमयों विकसित हुआ, जिसका उच्च अंतरस्थिति का अंतरस्थिति और भौतिक में तथा जाना में वैश्विक विकसित मंदिर में देखा कर दिशा हो सकता है। जीवन (भारतीय), वैज्ञानिक, वैज्ञानिक, भारतीय जीवन, भारतीय जीवन, बौद्ध धर्म, नैराज्य, भौतिक विज्ञान आदि देशों के साथ भारत का व्यापारिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राजनीतिक संबंध स्थापित हुआ। उपरुपुक्त क्षेत्र में भारतीय सांस्कृतिक व्यापारिक हेतु भौतिक अनुप्रयोग के रूप में सामुहिक व्यापारिक गतिविधि, हिन्दू
सन्तों-मनीषियों व बौध बिष्णुओं की भूमिका, समाज, धर्म, साहित्य व कला का प्रभाव आदि परिसरित किए जा सकते हैं। यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण तथ्य है कि भारतीय संस्कृति के प्रसार की यह प्रक्रिया सैन्य बन दुरारा नहीं लिखित हिन्दू मनीषियों व बौध बिष्णुओं दुरारा सम्पन्न हुई। इस क्रम में भारतीय संस्कृति की अनेक विशेषताएं दर्शक व दर्शक पूर्व एशिया में समाविष्ट हो गई तथा यहाँ के लोगों के आध्यात्मिक व नैतिक उद्देश्य के मार्ग प्रसार हुआ।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीशचन्द्र मिश्र फिलहाल अमेरिका में हैं तथा उन्होंने प्रेषित संदेश के माध्यम से बताया बदलते विश्व में भारत की क्या भूमिका हो यह तय करने के लिए जरूरी होगा कि भारत की सामाजिक उपस्थिति को विस्तार की जा रही है। दर्शक में एशियाई व दर्शक पूर्व-दर्शक के साथ हमारे विषय सम्बन्ध रहें हैं और सहयोग की अनेक सम्बन्धनाएं विद्यमान हैं। यह समर्थन इसी दिशा में एक आवश्यक पहल है। मूल्य-विवाद है कि इस समर्थन की उपलब्धियाँ दर्शक में एशियाई क्षेत्र के दर्शक के साथ सहयोग और संयुक्त का एक भरोसेमुद आधार करें।

सम्मलन में विविध सन्तों में विद्वानों के विचारों से अकादमिक बहस होगी जिससे शोधाथित इवें इतिहास तथा संस्कृति में रूचि रखनेवाले अंतरराष्ट्रीय विद्वानों तथा दर्शकों लाभान्वित होंगे। सम्मलन के आयोजक के लिए विश्वविद्यालय का युवान करने पर उन्होंने अखिल भारतीय इतिहास संकलन समारोह एवं भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के प्रति आभार जताया।

दो हिंद की सम्मलन में श्रीलंका, थाईलैंड, सिंगापुर, नेपाल आदि देशों के विद्वानों जो सीमा भारत के हिंद विश्वविद्यालयों के कुलपति तथा विविध संस्थाओं व अंतरराष्ट्रीय विद्वानों व दर्शकों लाभान्वित होंगे। सम्मलन में सर सुमन सिंह, राम माधव जी, प्रो. रामदेव भार्गव, प्रो. रविव्रत कहिरे, प्रो. छै. पी. बनसारी, प्रो. कपिल देव मिश्रा, प्रो. सृजना पांडेव, प्रो. बी. आर. मनीष, प्रो. वसन शिंदे, प्रो. अशोक जाजेडकर, प्रो. एस. कन्यान रमन, प्रो. सुरजित घोष, प्रो. एस. सी. मिल्ल, प्रो. आय. एस. विश्वकर, प्रो. रणजीत शेर, प्रो. गंगा महादेव, प्रो. ए. नारायण राय, प्रो. राजेव राजन, ब्रॉडिंग चुटक्की, प्रो. सुमन जैन, प्रो. अरुणा सिन्हा, प्रो. विनोद त्यागी, प्रो. वेदनाथ लाभ, प्रो. रामदेव तंवर, प्रो. के. टी. एस. सानु, प्रो. संतोष शुक्ला, प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, प्रो. सुरजित जॉली शामिल होंगे।

भारतीय इतिहास संकलन समारोह के उद्देश्य के बारे में डॉ. बाल मुकुंद पांडेय ने बताया कि यह योजना इतिहास के क्षेत्र में कार्यान्वयन एक राष्ट्रीय व्यापक संघर्ष है जो इतिहास, संस्कृति, परंपरा आदि क्षेत्रों में प्रामाणिक, तथ्यार्थक तथा सर्वोच्च स्तर से इतिहास-लेखन तथा प्रकाशन आदि की दिशा में कार्यान्वयन है। देश एवं विदेशों में रह रहे इतिहास एवं पुरातत्व के विवाद, विश्वविद्यालयों में कार्यान्वयन अनुसंधान केंद्रों के संचालन, भूगोल, खगोल, भौतिकशास्त्रियों अनेक क्षेत्रों के विद्वान तथा वैज्ञानिक एवं इतिहास में रूचि रखने वाले विद्वान इस कार्य में जुड़े हुए हैं। योजना के अंतर्गत भारतीय इतिहास में व्यापक विवाहित व वृद्धियों की ओर विश्व का नाम आकृति किया है। विवाहित कुछ दशकों में भारतीय ओर विश्व इतिहास से जुड़े अनेक भाषाएं तथ्यों के निर्माण में योजना को परियोजना सफलता प्राप्त हुई है।
झालण व येथील लोकांचा उतक सता ता। परंतु पण भारत आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयाचे आयोजन वर्ष, दि. 23 फेब्रुवारी 2018: अंखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, दिल्ली आणि महाम्सा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्षा यांचा संयुक्त विद्यमान दक्षिण आणि दक्षिण पूर्व आशियात भारतीय संस्कृती व विरासत' या विषयाचे दोन दिशास्थी (24-25 फेब्रुवारी) आंतरराष्ट्रीय संमेलनाचे आयोजन महाम्सा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्षा वेळात करणार आहे आहे. संमेलनाचे उदघाटन 24 रोजी सकाळी 10.30 वा. ह्या समाहार मुख्यालयाचे, समाहार होळकर. या समाहारात भारतीय लोक परंपरा, भारतीय कला, भारतीय स्थापत्य व विरासत, भारतीय तत्त्वज्ञान, भारतीय आर्थिक प्रभाव, व्यापार-वाणिज्य, भारतीय सामुदायिक व्यवहार, भारतीय प्रवासी समुदाय, भारतीय धर्म व अंतरात्मा, भारतीय नीती व जीवन मूळ, भारतीय प्रसार, भारतीय साहित्य, राजस्व व प्रशासन इत्यादी विषयांतर विचार-विचारांतर करणार भेटे. उदघाटन कार्यक्रमाची अध्यक्षानुसार हिंदी विश्वविद्यालयाचे कुलमूळ प्र. गौरीशंकर पिरसंधान राहतेच. संस्थेनात भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषदेंचे निदेशक डॉ. ओम जी उपाध्येय, भारतीय इतिहास संकलन योजनेचे अध्यक्ष डॉ. सतीश चंद्र गिरिजाचंद्र, भारतीय इतिहास संकलन योजनेयेचे राष्ट्रीय सचिव डॉ. बाळ गुखुद पांडे संस्थेचे मुख्य संयोजक प्र. एस. पी. बंसल, आयोजन सचिव प्र. अंतल कुमार राय उपस्थित राहतेच.

संस्थेनाची महत्त्वदा देशभाषाची शुभेच्छा विश्वविद्यालयाच्या नागरजुन अतिथिगृहाच्या समाहारात पक्षार्थ धारणात आलेली राज्यांनी भारतीय इतिहास संकलन योजनेयेचे राष्ट्रीय सचिव डॉ. बाळ मुखुद पांडे एवढनुसार अधिकारी बी. एस. मिरेंग उपस्थित होते.

विषयी आयोजित पक्षार्थ परिषदेत डॉ. बाळ मुखुद पांडे म्हणाले की या आंतरराष्ट्रीय समस्येचा मुख्य उद्देश्य दक्षिण पूर्व आशियातील मानवतावादी आदर, राजकीय मूल्य, कला, संगीत, तत्त्वज्ञान व संस्कृती पांढरे समस्याच्या अन्तर्गत करणे हा आहे. दक्षिण व दक्षिण पूर्व आशियातील देशांच्या बरोबर भारताचा संबंध निकटवर राहिलेला आहे. ई. पू. 200 पासूनचा हा संबंध आहे. येथे पौराणिक धर्म व बौद्ध धर्माचे अदरूंम बांधणे विकल्प झाले. बमां (म्यानमार), थाईलंड, इंडोनेशिया, मलेशिया, कम्बोडिया, बुदापे, श्रीलंका, नेपाल, मालदीव, नेपाल व बांगलादेश नाही. या विकास क्रमात भारतीय संस्कृतीच्या अनेक वैश्विक दक्षिण व दक्षिण पूर्व आशियातो समाविष्ट कोसऱ्याचे व येथील लोकांचा आधारात्मिक व नैतिक उत्कृष्टता मार्ग प्रशस्त झाला.

कुलमूळ प्र. गौरीशंकर पिरसंधानेची भारत आंतरराष्ट्रीय सत्ता संफंस प्रजासत्ता आहे. जापानी इतिहासकार 1947 वर्षात ढालीला आहे परंतु भारतातील संस्कृतिक सत्ता प्राथमिक आहे. इतिहासकारांनी उल्लेख साहित्य आणि पुरातत्त्व याचा आधार अंतरराष्ट्रीय सांगण्यामध्ये आणि बुधुमल्य योगदानाला अध्ययन केलेले आहे. व्यापारात ढालते भारत अस्तित्वाची राहिलेला आहे. आशियातील इतिहास देशांत भारतात वैश्विक संबंध राहिलेला आहे. दुरुपयोगांनी प्राचीनमात्र जनरेल्ट्रॉ भारतात इंडिया म्हणून संबंधित जेणे आहे. आज बुधुमल्य विश्वविद्यालयाची संस्कृतला उपयोग आहे असून परस्पर सहकार्याच्या ढंठिते जग भारतात केलेले पाहत आहे. बदलत्या जगात भारतातील तथा भूमिका असेल हे जापान ध्येयशास्ती संस्कृतिक उच्चारणात लक्षात राहणे म्हणून मराठेच आहे. दक्षिण आशियातील देशांमध्ये आमचे विशिष्ट संबंध राहिलेला असून भविष्यातील अनेक शक्ती कार्यकर्त कार्यालयांनी हे सम्मलन याच दिशेने एक
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha will Organise

International Seminar on 'Indian Culture and Heritage in South and Southeast Asia'

Scholars from abroad and India will attend International Seminar

Wardha, February 2018: The All India History Compilation Scheme, New Delhi with the joint collaboration of Mahatma Gandhi International Hindi University, Wardha are Organizing a two-day (24-25 February) international seminar on "Indian Culture and Heritage in South and Southeast Asia" under in Mahatma Gandhi International Hindi University, Wardha.

The seminar will be inaugurated in Shyama Prasad Mukherjee auditorium on February 24 at 10.30 pm. In this seminar presentation of research paper and discourse on Indian folk tradition, Indian art (visual and exhibiting art) Indian architecture and heritage, Indian philosophy, Indian economic impact, trade and commerce, Indian maritime activities, Indian expatriate community, Indian religion and spirituality, Indian policy and life value, Discussion on Indian concepts, Indian concepts of Indian literature, revenue and administration etc will be done.

The inauguration ceremony will be presided by Prof. Girishwar Mishra, Vice Chancellor of Hindi University. This occasion will be marked by the auspicious presence of Dr. Satish Chandra Mittal, Chairman of Indian History Compilation Scheme, Dr. Bal Mukund Pandey, National Organization secretary of Indian History Compilation Scheme, Prof. S. P. Bansal, Chief Convenor of the seminar Dr Om Upadhyay, Indian History Research Council and Organizing Secretary of the seminar Prof. Anil Kumar Rai.

Dr. Bal Mukund Pandey, B. S. Mirge, PRO attended the Press Conference, held at Nagarjun Guest House, MGAHV, Wardha.

In a press conference held in the context of the seminar, Dr. Bal Mukund Pandey said that the basic purpose of this international conference is to explore the humanitarian ideals, political values, art, music, philosophy and culture of South and South East Asia diffused from India through millennia old cultural and historical contact in the light of innovative research and facts in this area. Besides this this seminar will also ensure proper interpretation of cultural diffusion of India and proper exploration of Indian heritage in this area will also be targeted.
He said that India's relations with South and South-East Asian countries have been very close. India's multi-faceted presence in this region dates back to BC 200. A wonderful combination of mythical religion and Buddhism developed, which flourishes in Angkorwat and Cambodia and in Borobudur Stupa and Pramanan Temple in Java. India's business, cultural, social and political relationship with Burma (Myanmar), Thailand, Indonesia, Malay Peninsula (Malaysia), Cambodia, Bhutan, Sri Lanka, Nepal, Maldives and Vietnam etc is also an established one.

In the above mentioned areas, the role of marine business activity, the role of Hindu saints, intellectuals and monks, society, religion, literature and art effects can be enumerated as the main agencies for Indian cultural prevalence. It is a very important fact that this process of spreading Indian culture was accomplished by the military forces, not by the Hindu mystics and the Buddhist monks. In this sequence, many features of Indian culture were incorporated in South and South East Asia, and the path of spiritual and moral prosperity of the people.

The Vice-Chancellor of Mahatma Gandhi International Hindi University Prof. Girishwar Misra said that It will be necessary for India to decide what role India will play in the changing world, that the cultural presence of India should be recognized in different areas. We have a special relationship with South Asian and South East Asian countries and there are many possibilities of co-operation. This conference is an essential initiative in this direction. I am confident that the achievements of this conference will provide a reliable basis for cooperation and dialogue with countries of South Asian region. He expressed his gratitude to the All India History Compilation Scheme and the Indian Council of Historical Research for selecting this university for organising the seminar.

Academic debate, views of the different scholars in the seminar will benefit the students who are interested in research of history and culture. In the two-day seminar, Vice Chancellors of various Universities of India including the scholars of countries such as Thailand, Singapore and Nepal and the various presidents and directors of various institutions will be present. In this seminar Sir Sumana Siri, Ram Madhav Ji, Prof. Ramdev Bhargava, Prof. Ravindra Kahire, Prof. s. P. Bansali, Prof. Kapil Dev Mishra, Prof. Sushmita Pandey, Prof. B. R. Money, Prof. Vasan Shinde, Prof. Arvind Jamdekar, Prof. s. Kalyan Raman, Prof. Surjit Ghosh, Prof. s. C. Mittal, Prof. Income. s. Vishwakarma, Prof. Ranjeet K. Shukla, Prof. Gauri Mahoolkar, Prof. a. Narayan Rai, Prof. Rajiv Ranjan, Prof. Himanshu Chaturvedi, Prof. Suman Jain, Prof. Aruna Sinha, Prof. Vignesh Tyagi, Prof. Vaidyanath Benefit, Prof. Ragendra Tanwar, Prof. K. T. S. Sanu, Prof. Santosh Shukla, Prof. Anand Vardhan Sharma, Prof. Surjit Jolly will participate .

Regarding the purpose of the Indian History Compilation Scheme, Bal Mukund Pandey said that it is nationwide organization which is working, in the direction of authentic, factual and comprehensive history-writing and publication in areas like history, culture, tradition etc. Scholars of history and archaeology living in the country and abroad, the directors of research centers operating in the universities, geographers, astronomers, scholars from many areas and scholars interested in history are connected with this work. Under the scheme, the discrepancies and errors in Indian history are brought in the knowledge of the world. In the last few decades, the plan has achieved considerable success in resolving many misleading facts related to Indian and world history.